A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 02, July-December, 2025

साहित्य और संगीत में अंतर्संबंध

Tajaswini Sharma
Research Scholar, Music, Government Post Graduate College Berinag, Pithoragarh.

OPEN ACCESS CC BY

सारांश

साहित्य तथा संगीत, ये दोनों कलाएँ मानव जीवन में अपना विशेष महत्व रखती हैं। यह कलाएँ भिन्न-भिन्न होने पर भी एक-दूसरे से गहरा संबंध रखते हुए एक-दूसरे को पूर्ण करती हैं। साहित्य में जहाँ अभिव्यक्ति का साधन शब्द है, वहीं संगीत भावाभिव्यक्ति के लिए स्वर, राग एवं ताल की सहायता लेता है। साहित्यिक रचना जब संगीत का आश्रय लेती है, तो वह स्वर, लय तथा ताल से अलंकृत होकर मानव हृदय को छू जाती है। वहीं, संगीत को जब साहित्य का सहारा मिलता है, तब वह अत्यधिक गूढ़ एवं अर्थपूर्ण हो जाता है। ये दोनों ही कलाएँ परस्पर संबंध रखते हुए मानव जीवन पर गहरा प्रभाव डालती हैं।

उद्देश्य – साहित्य एवं संगीत के अंतर्निहित संबंधों को जानना।

लक्ष्य - साहित्य एवं संगीत के मध्य निहित संबंधों को समाज में परिलक्षित करना।

***मुख्य शब्द** – संगीत, साहित्य, साहित्य एवं संगीत का अंतर्संबंध।*

प्रस्तावना

साहित्य एवं संगीत, दोनों ही कलाओं की मानव जीवन में महत्ता भला कौन ही नकार सकता है। इन दोनों ही कलाओं का अस्तित्व नवीन नहीं बल्कि अत्यंत पुरातन है, जिसकी जड़ें मानव सभ्यता के आदिकाल से जुड़ी हैं। यह मनुष्य का स्वाभाविक गुण रहा है कि उसने अपनी भावनाओं एवं विचारों की अभिव्यक्ति के लिए साहित्य एवं संगीत का आश्रय लिया है। मानव के हृदय से प्रस्फुटित हुईं भावनाएँ, सदा साहित्य तथा संगीत के रूप में प्रकट होती आई हैं। आदिकाल में जब मनुष्य आदिमानव के रूप में अपना जीवन व्यतीत करता था तब भी वह अपनी प्रसन्नता एवं दुख जैसे भावों को व्यक्त करने के लिए इन दोनों कलाओं का आश्रय लेता था। यह सत्य है कि उस समय इन कलाओं का रूप इतना समृद्ध एवं स्पष्ट नहीं था, परन्तु मानव सभ्यता के विकास के साथ-साथ ये कलाएँ और भी अधिक विकसित एवं समृद्ध होती चली गईं। वैदिक काल में यह कलाएँ समाज के समक्ष अपने सुव्यवस्थित रूप में प्रकट होकर आयीं, जिसका उत्कृष्ट उदाहरण हमारे वेद हैं। वेद न केवल साहित्य अथवा संगीत कलाओं को बल्कि इनके अंतर्संबंध को भी स्पष्ट करते हैं। हिन्दू धर्म के सबसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ वेद जहाँ एक ओर भारतीय साहित्य की जड़ें हैं, वहीं दूसरी ओर संगीत इनका प्राण है। वेदों की ऋचाओं का संगीतमय गान गूढ़ साहित्य एवं उत्कृष्ट संगीत कला का दृष्टांत है। वेदों में सामवेद पूर्णतः संगीतमय है, जो अपार साहित्य एवं संगीत कला को अपने में संजोए हुए यह दर्शाता है कि संगीत तथा साहित्य ये कलाएँ सदा से एक दूसरे की पूरक रही हैं। वैदिक काल में साम गायन का प्रचार था तथा "साम का छन्दोंबद्ध गीतों से गायन होता था।"[i] मानव जीवन में रामायण तथा महाभारत जैसे अनेकों व्यापक साहित्यिक ग्रन्थ हैं, जिनके श्लोकों के उच्चारण के समय स्वतः ही एक संगीतमय लय बन जाती है, जो हमें यह आभास कराती है कि साहित्य तथा संगीत, दोनों एक दूसरे के बिना कुछ अधूरे से हैं। भरत मुनि द्वारा रचित नाट्यशास्त्र ग्रन्थ नाट्य, साहित्य एवं संगीत कला के अनूठे संगम का उदाहरण है, जो साहित्य एवं संगीत को एक साथ लेकर चलता आया है। नाट्यशास्त्र के अनुसार नाट्य की उत्पत्ति वेदों से मानी गई है, तथा इसमें सभी कलाओं का समावेश बताया गया है। यह दोनों कलाएँ एक दूसरे की पूरक है तथा नाट्य में संगीत एवं साहित्य, दोनों ही कलाओं का अमूल्य योगदान है। मध्यकाल में मीरा, सूरदास, रसखान इत्यादि ऐसे अनेक भक्त कवि हुए हैं, जिनकी रचनाओं में साहित्य और संगीत का अंतर्संबंध स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। इनकी रचनाएँ संगीतात्मक छन्द काव्य हैं, जिनके पदों को आज भी रागों- तालों से जोड़ कर गाया बजाया जाता है। इन भक्त कवियों के साहित्य में संगीत, एक माला में मोतियों की भांति गुथा हुआ है। भक्ति काल की रचनाओं में जहाँ साहित्य भाव और प्रेम से भरा है वहीं संगीत इन भावों को जीवंत कर देता है। जैसे सूरदास का यह पद विरहा के कष्ट को प्रदर्शित करता है -

"भुख प्यास अरु नी द गई सब, विरह लरो तन लूटी।
दादुर मोर पपीहा बोले, अवधि भई सब झूठी।
पाछे आइ तुम कहा करोगे, जब तन जैहै छूटी।
राधा कहति सेंदेश स्थाम सो, भई प्रीति की टूटी।" [ii]

वहीं मीरा बाई का यह पद भगवान कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम प्रकट करता है –

"भली कहो कोई बुरी कहो, मै सब लई सीस चढ़ाए।
मीरा प्रभु गिरिघरन लाल बिनु, पल भर रह्यो न जाय ॥"iii

यह रचनाएँ आज न केवल पढ़ी जाती हैं बल्कि संगीत के स्वरों से युक्त होकर गाई जाती हैं। यह काल साहित्य एवं संगीत इन दोनों कलाओं के समन्वय का अद्भुत काल रहा, जिसने साहित्य एवं संगीत दोनों कलाओं को जनमानस तक पहुँचा कर अध्यात्मिक चेतना का विकास किया, तथा मनुष्य के भीतर कलात्मक अभिव्यक्ति की चेतना का विकास किया। वर्तमान समय में भी यह कलाएँ भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का मार्ग प्रशस्त करने में प्रयासरत हैं। आधुनिक समय में भी हम यह पाते हैं कि एक उत्तम रचना किसी साहित्यकार अथवा रचनाकार के द्वारा लिखी जाती है जिन्हें संगीतकार स्वर एवं ताल में ढालकर संगीतमय बनाते हैं। लोक साहित्य भी आज संगीतबद्ध होकर, लोक दायरों से बाहर निकलकर विश्व स्तर पर अपनी पहचान बना रहे हैं। भिन्न-भिन्न होने पर भी यह कलाएँ एक दूसरे से इतनी अंतर्संबंधित हैं कि किसी एक आभाव में दूसरी कला अपूर्ण सी लगती है। इन दोनों कलाओं के अंतर्संबंध को पग-पग पर देखा जा सकता है, जैसे -

- भावाभिव्यक्ति के सशक्त माध्यम।
- एक युग की संस्कृति, सभ्यता एवं इतिहास का दर्पण।
- मानवता एवं परोपकार जैसी भावनाओं के संवाहक।
- अध्यात्म जागृति में सहायक।
- संज्ञानात्मक, बौद्धिक एवं मानसिक विकास में सहायक।
- जन आन्दोलनों एवं क्रांति में सहायक।

यह दोनों कलाएँ मनुष्य की भावाभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम हैं। मनुष्य जब प्रसन्न होता है, तो वह खुशी में गुनगुनाता है, गीत गाता है, वहीं जब किसी दुख में व्याकुल होता है तब उसके मन में विषाद उत्पन्न होता है जो भिन्न-भिन्न रचनाओं और धुनों को जन्म देता है। मनुष्य अपने हर्ष-शोक, प्रसन्नता-व्याकुलता जैसे अनेकों भावों को उद्घाटित करने के लिए साहित्यिक एवं संगीतात्मक रचनाओं का आश्रय लेता है जो भावाभिव्यक्ति के लिए साहित्य एवं संगीत की दृढ़ता को प्रदर्शित करते हैं। यह कलाएँ भावाभिव्यक्ति के साथ-साथ एक युग की संस्कृति, सभ्यता एवं इतिहास का दर्पण भी हैं, जो हमें उस समाज की वर्तमान संस्कृति, सभ्यता एवं इतिहास का बोध कराती है। जैसे- वैदिक, मध्यकालीन एवं आधुनिक साहित्य, संगीतात्मक साहित्य के अलंकरणों से युक्त होकर अपने-अपने युग की झाँकी प्रस्तुत करते है। यह कलाएँ मनुष्य में मानवता एवं परोपकार जैसी भावनाओं की संवाहक हैं, जो मनुष्य को 'परोपकाराय सतां विभूतयः' जैसी भावनाओं से ओत-प्रोत करके उच्च आदर्शों का निर्माण करती है। मनुष्य जब उत्तम साहित्य पढ़ता है, तो वह शालीनता जैसे महान गुणों को अपनाता है। संगीतात्मक स्वर-लहरियाँ इस साहित्य से जुड़ाव को और भी अधिक गहरा करती हैं। यह कलाएँ मनुष्य को अध्यात्मिक रूप से सबल बनाकर उन्हें परमानन्द की प्राप्ति के लिए प्रेरित करती हैं। भक्ति काल की असंख्य रचनाएँ मानों ईश्वर से हमारा साक्षात्कार कराती हैं, जैसे – मीरा बाई की रचना 'पायो जी मैंने राम रतन धन पायो' को सुनकर स्वतः ही हृदय में अपने इष्ट के प्रति प्रेम की अनुभूति जागृत हो जाती है। यह कलाएँ मनुष्य के संज्ञानात्मक, बौद्धिक एवं मानसिक विकास में सहायता प्रदान करने के साथ-साथ मनुष्य में देशप्रेम की भावना भी जागृत करती हैं।

निष्कर्ष

संगीत एवं साहित्य, इन दोनों ही कलाओं की अंतर्संबंधता अत्यंत सघन एवं घनिष्ठ है। ये दोनों कलाएँ एक दूसरे को सम्पूर्णता प्रदान करती हुई मनुष्य की मानवीय चेतना एवं कलात्मक विकास में सहायता प्रदान करती हैं। साहित्य के शब्द जब संगीत से सुसज्जित होते हैं, तो वह मानवीय भावनाओं को ओर अधिक उन्नत एवं समृद्ध बनाते हैं। इन दोनों कलाओं में मानव जीवन की सम्पूर्णता निहित है, जो समाज के कल्याण के लिए उत्तरदायी है।

संदर्भ सूची

i शर्मा डॉ0 मृतुन्जय, संगीत मैनुअल, 2001, एच0 जी0 पब्लिकेशन्स नई दिल्ली, पृ० सं० 84
ii वर्मा डॉ0 धीरेन्द्र, सुर सागर सार, 1986, साहित्य भवन लिमिटेड इलाहाबाद, पृ० सं० 350
iii पद्मावती शबनम, मीराँ-बृहत्-पद-संग्रह, 2008, लोक सेवक प्रकाशन बुलानाला बनारस, पृ० सं० 29